समस्त लोक में भय व्याप्त हो गया। देव, असुर, सिद्ध, यक्षादि सब चौंक उठे। भैरवाकर शिव ने सभी को अभयदान दिया। तीनों ही लोक में काम को जलाकर उसका नाम दमन रखा गया।

दूसरी ओर, गौरी की परिचर्या में लगी कामदेव की पत्नी रति चित्कार कर उठी और कदली की तरह निढ़ाल होकर गिर पड़ी। पार्वती दौड़ी और वहां भैरवावतार के कारण भस्मीभूत हुए अनंग सहित गोचरभूमि को वृक्षविहीन देखा। उसने अपने स्नेह से विरुत् वृक्ष दमनक को जीवनदान दिया। रति की आंखों से गिर रहे आंसुओं को रोका। प्रसन्नमन शिव ने भी आगे बढ़कर उमादेवी के मनोभावों का अनुमोदन किया और कामदेव को दमनक विरुत के रूप में वर दिया कि वसन्तकाल में वसन्त के साथ कामदेव की जो कोई आराधना करेगा, उनकी कामनाओं की पूर्ति होगी, 'वसन्तकाले सवसन्त मन्मथं यजन्ति ये अद्य प्रभृतीह मां जना:। त्वदंगभूतै: दमनच्छदादिभिर्भजन्तु कामानभिवांछितांश्च ते।।'

यह कहानी लोककथाओं से लेकर पुराणों में भी मिलती है। स्वच्छन्द भैरव तंत्र से सोमशम्भुपद्धति में भी इस कहानी को उद्धृत किया गया है : स्वच्छन्दभैरवे तन्त्रे यद्यपीत्थमुदाहृतम्। इसमें शिव द्वारा दिए गए उन वरों का विशेष विवरण भी मिल जाता है, जिसमें कामदेव लोगों की कामनाओं की पूर्ति के योग्य होते हैं। यह पूजन पर्व ही दामनक कहा जाने लगा। इस कथा में मिथक से अधिक प्रकृतिगत

वसन्त को नमस्कार

इस प्रकार वसन्त में अशोक वृक्ष की पूजा का यह अनूठा अनुष्ठान था जिसमें वसन्त की अर्चना के रूप में वृक्ष, गुल्म, लतादि से प्रार्थना रूप में यह कहा जाता कि वृक्ष हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं- ॐ वसन्ताय नमस्तुभ्यं वृक्ष गुल्म लताप्रिय। सहस्त्रमुख संवाह, कामबन्धो नमोस्तु ते।। ऐसा उच्चारण कर तीन पुष्पांजलि प्रदान की जाती। देवियों सहित वसन्त देव की पद्मदल के आगे की ओर से शक्ति वनदेवता का पूजन होता। इसमें नौ वनदेवियों का उसके नौ नामों से स्मरण किया जाता। यथा- आह्लादिनी, गन्धवती, सुरभि, मालिनी, मदिरा, मदयन्ती, रमा, पुष्पवती और वासन्ती। इन सभी के ध्यान के अनुसार वे सुवेष और आभरण धारण करती हैं, उनके अंग ललित हैं और मुख पर सौम्य मुस्कान है- सर्वा: सुवेशाभरणा ललितांग्य: स्मिताननाः।

वनस्पति के मुकुलित और मादक होकर वातावरण को मनोरम बनाने की परम्परा निहित है। इसी में राग और रागिनियों के अधिपति वसन्तराग का न्यास भी जुड़ा हुआ है।

दामनक पर्व मनाने के सन्दर्भ

चैत्र या वैशाख मास में अष्टमी या चतुर्दशी को यह पर्व मनाया जाता। सोमशंभु पद्धति में कहा गया है कि शम्भु-दामनक पर्व के आयोजन से भोग और मोक्ष दोनों ही सुलभ होते हैं। इस पर्व की तैयारी के लिए एक सप्ताह या एक पखवाड़ा पहले ज्वारे बोए जाते थे। इसके लिए आवश्यक सामग्री जुटाते हुए मंडप को बनाया जाता था। इसके बाद सप्तमी अथवा त्रयोदशी के दिन नित्यार्चन विधि को किया जाता। इसमें यज्ञभवन को सजाया जाता। वहां वितान या चंदोवा तान कर उसको अनेक प्रकार के फूलों और फलों की मालाओं से अलंकृत किया जाता था। इसके बाद दमनक के उद्यान में अशोक वृक्ष को सजाया जाता। उस अशोक के मूल भाग को विशेष रूप से अलंकृत किया जाता था। यदि कभी ऐसा नहीं हो पाता था तो अर्चनागृह में ही सुन्दर बगीचा बनाया जाता और वासन्तिकी पूजा पूरी की जाती थी।

इस अवसर पर नैर्ऋत्य कोण में गणपति और ईशान में गुरु की पूजा की जाती। इसमें जो प्रार्थना की जाती, उसमें अशोक से यह प्रार्थना की जाती थी कि उसने कामदेव की स्त्री के शोक का हरण किया है, वह हमारे शोक और पीड़ाओं का शमन करे तथा नित्य आनन्द प्रदान करे- अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकनाशन। शोकार्ति हर मे नित्यमानन्द जनयस्व मे। (ईशान शिवगुरुदेव पद्धति क्रियापाद 22, 25)

रंगोलीपूर्वक जाप-अर्चना

पूर्वोक्त प्रार्थना और निवेदन के बाद अशोक के पेड़ को गन्ध चढ़ाया जाता और दीपदान भी किया जाता है। इसमें प्रथमत: उस काल का ध्यान किया जाता जो त्रुटि से लेकर युग पर्यन्त गणनाकार वाला, अव्यय विभु, निरंतर रहने वाला और अनादि माना गया है। अशोक की बाहरी अर्चना की जाती और फिर दक्षिण-उत्तर दिशा में बनाए गए मंडल में सूत्रित रूप से धान्यों को रखा जाता, वहां पर धूप की जाती। दक्षिण में कुम्भ रखा जाता जो सुगन्धयुक्त जल से भरा होता। उसको हिरण्य सहित कूर्च, कुसुम, फल, वसन, माला और अक्षत आदि चढ़ाकर सजाया जाता। यह वसंत का रूप होता। उत्तर में कामदेव को माना जाता और उसके लिए आधार शक्ति के रूप में अनन्त आसन, धर्मादि पीठ, राजस, तामस व सत्वमय पद्म की बिसात की जाती और उसके नाम का मन्त्र जपा